Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 3, March - 2026

DOIs:10.2018/SS/202603005 --:-- Research Paper / Article / Review

लोकगीतों से इतिहास संरक्षण: वीर राम सिंह पठानिया की वार का अध्ययन

डॉ. कविता कटोच
सहायक आचार्य, संगीत, राजकीय महाविद्यालय सैंज
ई मेल - **googooarohi@gmail.com**

सारांश : भारत के इतिहास में वीर राम सिंह पठानिया नूरपुर क्षेत्र के ऐसे शौर्य-पुरुष हुए हैं, जिनका नाम ऐतिहासिक दस्तावेज़ों से लेकर जनमानस की स्मृतियों में लोकगीतों के माध्यम से आज भी जीवंत है। वीर राम सिंह पठानिया ने ब्रिटिश सत्ता के अन्यायपूर्ण शासन के विरुद्ध अदम्य साहस, रणकौशल और आत्मबल का परिचय दिया। नूरपुर अंचल में प्रचलित लोकगीत "कोई किल्ला वजीर खूब लड़ेया" वीर राम सिंह पठानिया की वीरता और शौर्य का सशक्त प्रमाण है। यह लोकगीत लोक मन की अभिव्यक्ति के साथ-साथ इतिहास को संजोने का एक भी एक प्रभावी माध्यम है। इस लोकगीत के द्वारा समाज ने अपने वीर नायक की स्मृति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाया है। लोकगीतों की मौखिक परंपरा ने लिखित इतिहास के अभाव में भी वीर राम सिंह पठानिया के संघर्ष, बलिदान और राष्ट्रप्रेम को जीवंत बनाए रखा है। वीर रस से ओतप्रोत यह लोकगीत जनता की सामूहिक चेतना को प्रतिबिंबित करता है और दर्शाता है कि किस प्रकार लोक साहित्य इतिहास संरक्षण का एक सशक्त उपकरण बनता है। लोकगायक, ग्रामीण समाज और सांस्कृतिक परम्पराएं मिलकर वीर राम सिंह पठानिया को श्रद्धांजलि अर्पित करती रही हैं। इस प्रक्रिया में लोकगीतों ने केवल अतीत का स्मरण ही नहीं कराया, बल्कि समाज में वीरता, स्वाभिमान और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा भी दी है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के स्वतंत्रता संग्राम में वीर राम सिंह पठानिया के योगदान और लोकगीत "कोई किल्ला वजीर खूब लड़ेया" की भूमिका का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

संकेत शब्द: वीर राम सिंह पठानिया, लोकगीत, इतिहास संरक्षण, मौखिक परम्परा, स्वतंत्रता संग्राम इत्यादि।

1. वीर राम सिंह पठानिया: एक परिचय

वीर राम सिंह पठानिया देवभूमि हिमाचल से सम्बन्ध रखने वाले एक साहसी योद्धा थे। मंगल पांडे जी को स्वतंत्रता संग्राम का पहला बलिदानी माना जाता है। मगर मंगल पांडे जी से करीब 10 वर्ष पहले अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र क्रांति करते हुए वीर राम सिंह पठानिया ने मां भारती के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दे दिया। वीर राम सिंह पठानिया जी का जन्म नूरपुर रियासत में 10 अप्रैल, 1824 को हुआ। उनके पिता श्याम सिंह जी नूरपुर रियासत के राजा वीर सिंह के मंत्री थे।

राजा वीर सिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके बेटे जसवंत सिंह ने नूरपुर रियासत की राजगद्दी संभाली। अंग्रेजों ने राजा जसवंत सिंह की अल्पायु का लाभ उठाया। उन्होंने 5000 रुपए में नूरपुर रियासत को अपने शासन में मिलाने की घोषणा कर दी। अंग्रेजों का यह षड्यंत्र वीर राम सिंह पठानिया को रास नहीं आया। उन्होंने कटोच राजपूतों के साथ मिलकर सेना बनाई और अंग्रेजों पर धावा

बोल दिया। इस आक्रमण से घबराकर अंग्रेज भाग खड़े हुए और वीर राम सिंह पठानिया ने नूरपुर किले पर पुनः अपना रियासत का ध्वज फहरा दिया। उसके पश्चात् भी वीर राम सिंह पठानिया ने अंग्रेजों को कई बार अपनी छोटी सी संगठित सेना के साथ चुनौती दी।

अंग्रेजों को अब अच्छी तरह समझ आ गया था कि आमने-सामने के युद्ध में राम सिंह पठानिया को परास्त नहीं किया जा सकता। इसलिए उन्होंने पहाड़ चंद नाम के एक ब्राह्मण को अपने साथ मिला लिया। पहाड़ चंद ने अंग्रेजों को बताया कि जब राम सिंह पठानिया चंडी देवी की पूजा करने के लिए मंदिर जाते हैं, तो उस समय वह निःशस्त्र होते हैं। उसी समय राम सिंह पठानिया को पकड़ा जा सकता है। एक दिन मौका पाकर अंग्रेजों ने मंदिर में पूजा करते समय वीर राम सिंह पठानिया को घेर लिया। बताया जाता है कि उसी समय राम सिंह पठानिया ने पूजा के लिए लेकर गए लौटे से ही कई अंग्रेजों की हत्या कर दी। मगर संख्या में अधिक और हथियारों से लैस अंग्रेजी सैनिकों ने अंततः वीर राम सिंह पठानिया को पकड़ लिया। उन्हें रंगून जेल भेजा गया। यहां उन्हें कड़ी यातनाएं दी गईं। अंततः 11 नवंबर, 1849 को मात्र 24 वर्ष की आयु में वह मां भारती की स्वतंत्रता के लिए लड़ते हुए बलिदान हो गए। मगर अपने अप्रतिम साहस और शौर्य के चलते वह आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

2. लोकगीत

लोकगीत समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर का जीवन्त प्रतीक होते हैं। लोकगीत समाज के जीवन के विभिन्न पहलुओं को अत्यन्त सरलता के साथ व्यक्त करते हैं। लोकगीत लोकमानस की सम्पूर्ण, सहज, बेरोक अभिव्यक्ति हैं।[1] ये गीत आमतौर पर समुदायों के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और पारिवारिक आयोजनों के दौरान गाए जाते हैं। विवाह, जन्म, मृत्यु, फसल की कटाई और अन्य उत्सवों के समय लोकगीतों का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। लोकगीतों में भावना की प्रधानता रहती है। लोकजीवन भावुक और सरल होता है। अतएव लोकगीत स्वाभाविक एवं लोकजीवन के अनुकूल होते हैं। ये लोकजीवन के अविच्छिन्न अंग हैं। इनसे दुःख हलका होता है, सुख दूना होता है और परिश्रम में थकान महसूस नहीं होती।[2] इस प्रकार इन गीतों में न केवल आनन्द पैदा होता है, बल्कि ये समाज की नैतिक शिक्षा, आदर्शों और सामाजिक मूल्यों को भी व्यक्त करते हैं।

राल्फ विलियम्स ने लिखा है, लोकगीत न पुराना होता है न नया। वह तो जंगल के उस वृक्ष के समान है, जिसकी जड़ें तो दूर जमीन में (भूतकाल) में धंसी हुई हैं, परन्तु जिसमें निरन्तर नई-नई पत्तियां, डालियां और फल फूलते रहते हैं।[3] लोक-गीत स्वतः-स्फूर्त प्राकृतिक काव्य के अंग हैं। लोक-गीतों में उनके रचयिता अथवा रचना-काल का प्रश्न महत्त्वपूर्ण नहीं होता; उनका महत्त्व तो उनकी सहज रसोद्रेक की शक्ति तथा सरल सौंदर्य में रहता है। उनमें एक व्यक्ति की अनुभूति की अपेक्षा लोक-हृदय की अनुभूति ही अधिक रहती है; व्यक्ति-विशेष की भावनाओं का प्रतिनिधित्व न कर लोक-गीत समुदाय की भावना के कहीं अधिक सच्चे प्रतीक होते हैं। काल और स्थान की सीमा को लांघ, लोक-गायकों और गायिकाओं के अधरों पर जीवित रहने वाले ये लोक-गीत अतीत की परम्परा को वर्तमान में भी अंशतः जीवित बनाए रखते हैं। समय के व्यवधान से लोक-गीतों के बाह्य स्वरूप में तो परिवर्तन अवश्य होते हैं, किन्तु उनके मूल-भाव तथा अभिव्यक्ति की अपनी विशेष शैली सामान्यतः अपरिवर्तित ही रहते हैं।[4]

भारतीय इतिहास की यदि बात करें, विशेषकर स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, तो लोकगीतों ने इस कालखंड में अपनी दोहरी भूमिका निभाई। पहला, लोकगीतों ने समाज को राष्ट्रभक्ति और स्वाभिमान के ऐसे स्वर दिए, जो स्वतंत्रता सेनानियों को स्वतंत्रता आंदोलन के लिए सदैव प्रेरित करते रहे। इन लोकगीतों को गुनगुनाते हुए स्वतंत्रता सेनानी भारत की स्वतंत्रता के पथ पर निरन्तर साहसपूर्वक आगे बढ़ते रहे। ये लोकगीत भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की अभिप्रेरणा बने। दूसरा, भारतीय समाज स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष का जब साक्षी बना तो उसने आंदोलन के दृश्यों से सम्बन्धित अपने अनुभवों एवं विचारों को लोकगीतों में पिरोया। स्वतंत्रता संग्राम की ऐतिहासिक घटनाओं के ये विवरण एवं अनुभव इतिहास के रूप में दर्ज हो गए। पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोकगीतों के

माध्यम से यह इतिहास भारतीय समाज में जीवंत बना रहा। स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में जिन महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रायः लिखित इतिहास में अभाव मिलता है, वहां ये लोकगीत इतिहास को देखने-समझने की एक प्रामाणिक दृष्टि प्रदान करते हैं।

वीर राम सिंह पठानिया भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के एक ऐसे नायक हैं, जिनको लेकर भारतीय इतिहास की किताबों में प्रायः एक सन्नाटा सा ही पसरा रहता है। वीर राम सिंह पठानिया जी का इतिहास कोई इतना पुराना इतिहास भी नहीं है कि उनसे जुड़े इतिहास के लेखन के लिए प्रामाणिक साक्ष्य ना मिलें। नूरपुर किला, वीर राम सिंह पठानिया का पैतृक गांव बासा वजीरां, शाहपुर कंडी किला, वीर राम सिंह पठानिया के अंग वस्त्र, पुरातत्व विभाग के पास जमा उनसे सम्बन्धित महत्वपूर्ण वस्तुएं, बासा वजीरां में ही मां चंडी का मंदिर आज भी वीर राम सिंह पठानिया का इतिहास सुनाते हैं। मगर इतिहासकारों की दृष्टि कभी इन पर गई ही नहीं। इसलिए भारतीय इतिहास की किताबों में वीर राम सिंह पठानिया जी के नाम के पन्ने कभी दर्ज ही नहीं हो पाए। वीर राम सिंह पठानिया जी का जो जीवन वृतांत मालूम होता है, वह या तो उनसे जुड़े ऐतिहासिक स्थलों से मिलता है अथवा उनके ऊपर गाए जाने वाले लोकगीतों ने उनकी स्मृतियों को जीवित रखा है। इस प्रकार लोकगीतों ने भारत के एक वीर नायक की शौर्य कथा को कभी गुमनाम नहीं बनने दिया। किताबों में ना सही, लोकगीतों ने वीर राम सिंह पठानिया के इतिहास को संरक्षित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

3. राम सिंह पठानिया की वीरगाथा-"पठानिया की वार"

वीर राम सिंह पठानिया की याद में नूरपुर और धौलाधार की रेंज में हर वर्ष मेला लगता है। इस मेले में इनकी तलवार और इनके कवच को प्रदर्शित किया जाता है। लोक गीत और नृत्य में इनकी बहादुरी को प्रदर्शित करते हैं। डल्ले की धार पर लगा शिलालेख आज भी उस वीर की याद दिलाता है। नूरपुर के जनमानस में इनकी वीरगाथा राम सिंह पठानिया की वार के नाम से गायी जाती है। राम सिंह पठानिया की वीरता की अमर गाथा वहां के लोग आज भी अपने गीतों में गाते हैं। ऐसा ही एक गीत "कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया" आज भी सार्वजनिक एवं पारिवारिक आयोजनों में बड़े उत्साह और भाव के साथ गया जाता है-

शाम सिंह दे घर राम सिंह जम्मेया,

जम्मेया कोई बलकार राजा।

जिनि जमदे लेई तलवार राजा,

कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया।

कोई बेटा वजीर दा खूब लड़ेया।।

डल्ले दिया धारा डफले बजदे,

कुम्मणि बजन तम्बूर राजा।

कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया।

कोई बेटा वजीर दा खूब लड़ेया।।

बुक्कां बुक्कां दारू जे बड़दा,

टोकरूआं बड़दा तीर राजा।

ओए! चंडी तेरी शमशीर राजा,

कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया।

कोई बेटा वजीर दा खूब लड़ेया।।

मेक्की लड़ना दे गोरेयां नाल राजा,

मैं तां लड़ना फिरंगियां नाल राजा।

गोरे कड्डने देश ते बाहर राजा,

कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया।

कोई बेटा वजीर दा खूब लड़ेया।।

लिखी परवाने राजेयां की भेजदा,

राजेयां दित्ता जवाब राजा।

तुसां करने राजेयो राज राजा,

असां रक्खनी कुले दी लाज राजा।

कोई ऐसा पठानिया खूब लड़ेया,

कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया।

कोई बेटा वजीर दा खूब लड़ेया।।

पहले तां खर्चा राजेयां मन्या,

पीच्छे ते दित्ता जवाब राजा।

कोई ऐसा पठानिया खूब लड़ेया,

कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया।

कोई बेटा वजीर दा खूब लड़ेया।।

तू जे लड़ाई कुम्मणि दे कित्ती ऐ,

लउए दे बगी गए नाल राजा।

कोई ऐसा पठानिया खूब लड़ेया,

कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया।

कोई बेटा वजीर दा खूब लड़ेया।।

इक्की फट्टें अंग्रेज चार मरे न,

ओथे मरेया जॉन पील राजा।

ओथे हारिया व्हीलर साहब राजा,

तू लिया ऐ पूरा हिसाब राजा।

कोई किल्ला पठानिया जोर लड़ेया।

कोई बेटा वजीर दा खूब लड़ेया।।

वीर राम सिंह पठानिया जी के शौर्य को समर्पित यह लोकगीत आज भी जब समाज गुनगुनाता है, तो वीर राम सिंह पठानिया के जीवन से जुड़े चित्र एक-एक करके आंखों के सामने से गुजरने लगते हैं। अभी हाल ही के कुछ वर्षों तक भटियात से सम्बन्धित एक परिवार हर वर्ष नूरपुर आकर घर-घर में वीर राम सिंह पठानिया से सम्बन्धित लोकगीतों को सुनाता रहा है। हालांकि अब यह परम्परा क्षीण होती दिख रही है।

4. निष्कर्ष एवं सुझाव

लोकगीत की मनोरंजन के अतिरिक्त किसी भी समाज के इतिहास को संरक्षित करने की भी बेजोड़ क्षमता रही है। वीर राम सिंह पठानिया से सम्बन्धित लोकगीतों का उदाहरण इसे स्पष्ट करता है। चिंतनीय विषय यह है कि वीर राम सिंह पठानिया से सम्बन्धित लोक गायन की परम्पराएं अब धीरे-धीरे क्षीण पड़ती जा रही हैं। अगर यह क्रम निरंतर जारी रहा तो हमारी एक बहुत बड़ी धरोहर लुप्त हो जाएगी। इसके लिए समाज को अपने स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है। उन लोगों को प्रश्रय एवं प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है, जो वीर राम सिंह पठानिया की वार के रूप में उनसे सम्बन्धित लोकगीतों को हर वर्ष सुनाते रहे हैं। हिमाचल प्रदेश सरकार ने वीर राम सिंह पठानिया के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में नूरपुर में वीरोत्सव मनाने का जो संकल्प लिया है, उससे कई आशाएं बंधती हुई नजर आ रही हैं। सरकार चाहे तो हिमाचल प्रदेश के शिक्षण संस्थानों में संचालित संगीत विभागों को भी यह दायित्व सौंप सकता है कि नई पीढ़ी को वीर राम सिंह पठानिया से सम्बन्धित लोकगीतों के गायन के लिए प्रेरित करे। अगर सरकार इस तरह की पहल करे, तो निश्चित रूप पर इसके दूरगामी परिणाम प्राप्त होंगे। यही हमारी वीर राम सिंह पठानिया जी के सर्वोच्च बलिदान के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी।

सन्दर्भ सूची

[1]डॉ. हरद्वारी लाल शर्मा, लोकवार्ता विज्ञान (खंड-2), पृष्ठ-718.

[2] वर्मा, गीडाराम, शेखावाटी के लोक-गीत, लोक-कला निबंधावली (भाग-3), प्रकाशन विभाग, भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर, 1957, पृष्ठ-63.

[3] परमार, श्याम, भारतीय लोक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, बम्बई, 1954, पृष्ठ-55.

[4] दुबे, श्यामाचरण, मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1960, पृष्ठ-166.